VOL- XII | ISSUE- II | FEBRUARY | 2025 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.379 | ISSN 2349-638x

बिन बाती के दीप नाटक में व्यक्त मूल्य विघटन

डॉ. विजया गाढवे
हिन्दी विभागाध्यक्षा,
संत तुकाराम महाविद्यालय, परभणी

प्राक्कथन :

जीवन मूल्य और मानवीय सम्बंध इस विषय का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। समकालीन साहित्य की नाटक विषा में बदलते परिवेश में मानवीय मूल्यों का विघटन दिखाई देता है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है और समाज मानव जीवन का संगठन है। अतः साहित्य के केंन्द्र में मानव ही है। मानवीय जीवन मूल्यों का विघटन या अंत किसप्रकार होता जा रहा है इसीका अध्ययन किया है।

उद्देश्य :

समकालीन हिन्दी नाटकों में व्यक्त मूल्य विघटन का अध्ययन करना। बदलते मानवीय सम्बंध पर प्रकश डालना।

'मूल्य' से मानविकी के सन्दर्भ में अभिप्राय है जीवन दृष्टि या स्थापित वैचारिक इकाई, जिसे हम 'नार्म' भी कह सकते हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मूल्य आवश्यकता या इच्छा की सन्तुष्टि के लिए प्रयुक्त होता है।

वास्तव में 'मूल्य' समाज के जीवन में सामाजिक, धार्मिक और नैतिक पृष्ठभूमि के लिए एक ऐसी वैचारिक इकाई, जिसका विकास व्यक्ति से समाज की ओर होता है, उसके साथ हमारा मानसिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, जिसके आधार पर हम औचित्य अनौचित्य का निर्णय करते हैं और जिसका अनुसरण करते हुए समाज का जीवन व्यवस्थित रूप से चलता है और सुख का अनुभव करते हैं। मूल्य मानव जीवन के कुछ ऐसे लक्ष्य है जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त कर अलक्षित रूप से हमारे आचरण का संचालन करते हैं। हमारे आचरणों और व्यवहारों का समूहीकरण ही मूल्य नामक धारणा के रूप में स्थापित होता है।

मानव को उसके पूर्ण अस्तित्व में स्वीकार करके ही 'मूल्य' की कल्पना सम्भव हो पाती है क्योंकि मूल्य की स्थिति किसी वस्तू में न होकर मानव में होती है। मूल्यों का संचालक मनुष्य होता है और मूल्यों का बनना बिगड़ना मनुष्य की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। आवश्यकताएँ समाज, सहयोग और अन्योन्याश्रितता के दौर में आविष्कृत होती है। परस्पर परंतु आज मानवीय मूल्यों का हास होते हुए हमें दिखाई देता है। मानव भौतिकवाद के पीछे दौड रहा है। मानव की सभ्यता की परिभाषा ही बदल गयी है। यांत्रिकीकरण के जाल में पूरीतरह फँस गया है। और अपने वास्तविक मानवीय जीवन मूल्यों को खोता जा रहा है। इसका दर्शन हमें समकालीन हिन्दी नाटकों में दृष्टिगोचर होता है।

डॉ. शंकर शेष लिखित 'बिन बाती के दीप' नाटक में मानवीय मूल्यों का विघटन दिखाई देता है। डॉ. शंकर शेष लिखित बिन बाती के दीप' प्रसिध्द नाटक है। प्रस्तुत नाटक में लेखकने आज के मनुष्य में मानवीय मूल्यों का हो रहा विघटन चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक तीन अंको में विभाजित है। इसका कथानक शिवराज और विशाखा के वैवाहिक जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। शिवराज और विशाखा की अधिकारिक कथा के साथ आनंद, मंजू और नटवर की कथा प्रासंगिक रूप में चलती है। विशाखा एक अत्यंत प्रतिभा संपन्न लेखिका है। तो शिवराज एक सामान्य स्तर का कवि है आपनी योग्यताओं एवं सीमाओं से भलिभाँति परिचित होते हुए भी शिवराज राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यकार के रूप में ख्याति प्राप्त करने की अभिलाषा रखत्ता है। शिवराज की प्रेयसी विशाखा एक अत्यंत प्रतिभा संपन्न लेखिका है। लेकिन उसकी आँखे कमजोर हैं। वह अपना प्रथम उपन्यास लिखकर पूरा करती है। किन्तु इसी दौरान इसकी कमजोर आँखे अत्यंत कमजोर हो जाती है। अंततः विशाखा अंधी हो जाती है। विशाखा का अंधत्व शिवराज के लिए एक चुनौती बन जाती है। चुनौति को स्वीकार करते हुए, प्रेम की कसौटी पर खरा उतरने के लिए शिवराज विशाखा से विवाह करता है। लेकिन आदर्श और सच्चे प्रेमी शिवराज को 'मोह का क्षण' ग्रस लेता है। बचपन से ही अपने मन में पलपी महत्वपकांक्षा की पूर्ति के लिए वह विशाखा का लिखा हुआ उपन्यास अपने नाम छपवाता है वह उपन्यास इतना लोकप्रिय होता है कि शिवराज

रातों रात हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ लेखक बन जाता है। अब आंधी विशाखा शिवराज के लिए सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी बन जाती है। विशाखा द्वारा लिखित हर उपन्यास को वह अपने नाम छपवाता है।

महत्वाकांक्षा की गोद में क्रूरता जैसी एक भयानकता भी साथ-साथ पनपती रहती है। महत्वाकांक्षा में अंध शिवराज अब बेईमान और क्रूर बन जाता है। वह विशाखा के ईर्द गिर्द एक बनावटी संसार बनाता है। एक ऐसा संसार जहाँ विशाखा को पाठकों के जाली पत्र सुनाये जाते हैं, जहाँ टेपरिकार्डर द्वारा रेडियो पर जाली वार्ता सुनाई जाती है। इतना ही नहीं इस बनावटी संसार में अंधी विशाखा को अंधी ही बनाये रखने के लिए विशाखा की आँखो में जाली दवा भी डाली जाती है। इन समस्त कुकर्मों में शिवराज का साथ देती है मंजू। मंजू शिवराज की टाईपिस्ट है और उसके सारे रहस्यों को जानती है। शिवराज मंजू को धन एवं विवाह का प्रलोभन देकर चूप्पी साधने के लिए विवश करता है। मंजू का यह कथन है कि 'मेरा मौन खरीदने के लिए मुझ पर रूपया पानी की तरह बहाया।' इस बात की पुष्टी करता है।

आनंद शिवराज का बचपन का दोस्त है। शिवराज के घिनौने कृत्यों और साजिशों के जानने के बाद वह अत्यंत क्रोधित हो जाता है। वह विशाखा की आँखो का इलाज करने के लिए उसे सिमला ले जाता है। बाद में वह शिवराज के काले करतूतों का पर्दाफाश करता है और विशाखा को सत्य से परिचित भी करता है। सत्य जानने के पश्चात विशाखा अत्यन्त दु:खी होती है। लेकिन पति को क्षमा करते हुए कहती है "इस घटना से मुझे एक नई अन्तर्दृष्टि मिली है। अब तक मैनें संसार को जिस दृष्टिकोन से देखा, ऐसा लगता है वह गलत था। सचमुच इस घटना ने मुझ में नये साहित्यकार की सृष्टि की है। अब मैं जीवन को अधिक वास्तविक रूप में अंकित कर सकूँगी। पर केवल तुम्हारे सहारे मैं सबकुछ भूल गई हूँ, मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं कर सकती। तुम मुझ अंधी से प्यार कर सके, तो क्या मैं तुम्हारा एक अपराध भी क्षमा नहीं कर सकती? शिव, अब मेरा नया साहित्यकार तुम्हारे ही माध्यम से संसार तक पहुँचेगा।"

नाटक के अंत में रहस्य खुल जाने पर शिवराज अपराध बोध से त्रस्त होता है। उसका अपराध बोघ अधिक तीव्र होता है जब वह इलाज के बावजूद भी विशाखा को अंधी ही पाता है। वह आत्मग्लानि से चीख उठता है और यहीं पर नाटक समाप्त होता है। नाटक का नायक शिवराज अपनी समृध्दि एवं यश के लिए अपनी पत्नी विशाखा का लिखा हुआ उपन्यास अपने नाम छपवा लेता है और प्रसिध्दि प्राप्त करता है। यहाँ विवशता यह है कि विशाखा अंधी है। मानवीय दृष्टिकोण से सोचे तो यहाँ शिवराज को विशाखा के प्रति सहृदयता का भाव रखना चाहिए था, किन्तु शिवराज जो विशाखा को अपने रास्ते से हटा देना चाहता है। यहाँ पति पत्नी के बीच विश्वास और आस्था का मूल्य टूट रहा है। आज पुरूष यश और समृध्दि के लिए कितना नीचे गिर सकता है और अपनी पत्नी के साथ इस प्रकार अमानवीय व्यवहार करने से भी नहीं डरता, यह बताने का प्रयत्न किया गया है मनुष्य अपनी धर्म पत्नी के साथ ऐसा दुर्व्यवहार करता है। तो मानव मूल्यों का जीवन मूल्यों का टूटना ही संभव है।

इस प्रकार डॉ. शंकर शेषने 'फंदी', 'घरौदां' इन नाटको में मानवीय मूल्यों का विघटन किस प्रकार हो रहा है इसीको दर्शाया है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है और समाज मानव जीवन का संगठन है। अत: साहित्य के केन्द्र में मानव है। डॉ. शंकर शेषने 'बिन बाती के दीप' इस नाटक द्वारा पात्र शिवराज के द्वारा अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति के लिए मानवता का विघटन या अंत करनेवाले अनेक शिवराज की ओर ध्यान केंद्रित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) हिंदी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ डॉ. दमयन्ती श्रीवास्तव
2) रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष डॉ. प्रकाश जाधव
3) डॉ. शंकर शेष के प्रमुख नाटकों में डॉ. कपिला मं.पटेल व्यक्त सामाजिक चेतना
4) बिन बाती के दीप- डॉ. शंकर शेष